बी.एच.आई.सी.-133 : भारत का इतिहासः *c.* 1206-1707
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BHIC-133**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी. -133 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) दिल्ली सल्तनत और मुगलों के राजनीतिक इतिहास वृतांतों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 20

2) मुगलों के अधीन केंद्रीय प्रशासन की व्याख्या कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) 13वीं से 15वीं शताब्दी के दौरान असम में नए राज्यों के उदय पर एक टिप्पणी लिखिए। 10

4) 1680 से 1707 के मध्य मुगल मराठा संबंधों की प्रकृति पर चर्चा कीजिए। 10

5) मुगलों के अधीन भू–राजस्व निर्धारण की प्रणालियों का वर्णन कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) मारवाड़ के राठौड़ 6

7) नायक राज्य 6

8) मनसबदारों की तीन श्रेणियां 6

9) इक्ता व्यवस्था 6

10) नक्शबंदी सिलसिला 6

1) दिल्ली सल्तनत और मुगलों के राजनीतिक इतिहास वृत्तांतों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 20

उत्तर :

दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य के राजनीतिक इतिहास को समझने में समकालीन फ़ारसी वृत्तांत, आत्मकथाएँ, प्रशासनिक ग्रंथ तथा दरबारी विवरण अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें शासकों के अभियान, उत्तराधिकार, दरबार की राजनीति और राज्य की वैधता के बारे में समृद्ध सूचना मिलती है। फिर भी इन्हें घटनाओं का निष्पक्ष प्रतिबिंब मानना उचित नहीं है। इतिहासकार को लेखक की सामाजिक स्थिति, आश्रयदाता, धार्मिक दृष्टिकोण और रचना के उद्देश्य को ध्यान में रखकर इनका आलोचनात्मक अध्ययन करना चाहिए।

सल्तनतकालीन इतिहास लेखन की प्रकृति

तेरहवीं से सोलहवीं शताब्दी के आरंभ तक इतिहास-लेखन पर फ़ारसी दरबारी संस्कृति और इस्लामी ऐतिहासिक परंपरा का गहरा प्रभाव था। इतिहासकार प्रायः सुल्तान के संरक्षण में लिखते थे अथवा राजनीतिक घटनाओं के प्रत्यक्ष या परोक्ष साक्षी होते थे। उनकी रचनाओं में राज्य की प्रतिष्ठा, युद्धों की सफलता, विद्रोहों का दमन और शासक के न्याय जैसे विषयों को महत्त्व मिला। समय-क्रम का पालन होने पर भी घटनाओं की व्याख्या अक्सर नैतिक-धार्मिक मान्यताओं से प्रभावित थी। इसीलिए उनकी भाषा में प्रशंसा, उपदेश और विरोधी शक्तियों के प्रति कठोर टिप्पणियाँ मिल सकती हैं।

मिनहाज-उस-सिराज और सल्तनत की स्थापना

मिनहाज-उस-सिराज की ‘तबकात-ए-नासिरी’ गुलाम वंश और तुर्की राजनीतिक सत्ता के अध्ययन का प्रमुख स्रोत है। इसमें मुहम्मद गोरी के उत्तराधिकारियों, इल्तुतमिश तथा बलबन के प्रारंभिक दौर की महत्त्वपूर्ण जानकारी है। लेखक शासकीय अभिजात वर्ग के निकट था और उसने राजनीतिक घटनाओं को इस्लामी विश्व-इतिहास की व्यापक पृष्ठभूमि में रखा। उसकी रचना से सत्ता-संघर्ष तथा प्रशासनिक प्रतिष्ठान की झलक मिलती है; किंतु सामान्य जनता, ग्रामीण